Definition of Money

मुद्रा की परिभाषाओं को निम्नलिखित वर्गों में बाँटा जाता है :—

① मुद्रा की संकुचित परिभाषा :—

रॉबर्टसन (Robertson) के अनुसार :— "एक वस्तु जो कि वस्तुओं की कीमत चुकाने या अन्य व्यापारिक जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए विस्तृत रूप से स्वीकार की जाती है मुद्रा है।

इस परिभाषा को संकुचित माना जाता है क्योंकि इसके अनुसार मुद्रा केवल विनिमय के माध्यम के कार्य को ही करता है।

② मुद्रा की विस्तृत परिभाषा

वाकर, हार्टले आदि विद्वानों ने मुद्रा की विस्तृत परिभाषा दिये है। हार्टले वाद्र (Hartley Wother) के अनुसार —

" मुद्रा वह है जो मुद्रा का कार्य करें।"

" Money is what money does."

यह परिभाषा विस्तृत है क्योंकि मुद्रा की ऐसी परिभाषा में विभिन्न देशों में विभिन्न वस्तुएं, जो मुद्रा की तरह उपयोग की गई थी को शामिल कर ले सकते है और मुद्रा के वर्तमान तथा भविष्य में होनेवाले कार्यों को भी शामिल किया जा सकता है।

③ मुद्रा की वर्णनात्मक परिभाषा :—

केन्स, थॉमस आदि विद्वानों ने मुद्रा की वर्णनात्मक परिभाषा दिये है। थॉमस के अनुसार :—

मुद्रा एक वस्तु है जिसे सर्व सम्मति

वस्तुओं के मापदण्ड तथा विनिमय के सहायक के रूप में चुना जाता है।

यह कुर्नोट परिभाषा पूर्णत: सही नहीं है क्योंकि मुद्रा के कार्य समय और देश के साथ बदल रहे हैं।

(4) मुद्रा की कानूनी परिभाषा :—

मुद्रा को सरकार द्वारा नियन्त्रित किया जाता है। नैप महोदय के अनुसार — "कोई भी वस्तु जो राज्य द्वारा मुद्रा घोषित कर दी जाती है मुद्रा हो जाती है।"

(5) मुद्रा की आधुनिक परिभाषा :—

अमरीकी अर्थशास्त्री केन्ट के अनुसार :—

वह कोई भी वस्तु मुद्रा है जो एक विनिमय के माध्यम या मूल्य के मापदण्ड के रूप में साधारणत: इस्तेमाल की जाती है और बहुधा स्वीकृत की जाती है।

क्राउथर (Crowther) के अनुसार :— "द्रव्य या मुद्रा वह कोई भी वस्तु है जो कि विनिमय के माध्यम और साथ मूल्य के मापदण्ड तथा संचय के लिए अक्सर स्वीकृत की जाती है।"

मुद्रा की परिभाषा से निम्नलिखित तथ्यों का पता लगता है :—

(1) कोई भी वस्तु — मुद्रा कोई भी वस्तु हो सकता है। भेड़, बकरी, जानवर की खाल, गेहूँ आदि समय समय पर मुद्रा की तरह इस्तेमाल किये जा चुके हैं। सोना, चाँदी अन्य धातु तथा अन्त में कागज आदि मुद्रा की तरह प्रयोग होते हैं।

② साधारण इस्तेमाल - एक मनुष्य के द्वारा कोई भी वस्तु मुद्रा की तरह साधारण इस्तेमाल में लाया जा सकता है।

③ अक्सर स्वीकृत - मुद्रा वही वस्तु होता है जिसे अधिकांश लोगों द्वारा अक्सर स्वीकृत की जाये।

④ विनिमय का माध्यम या मूल्य का मापदण्ड - मुद्रा में विनिमय का माध्यम का कार्य करने की क्षमता हो। साथ ही साथ मुद्रा मूल्य का मापदण्ड भी हो।

चेक को मुद्रा नहीं माना जाता है जबकि माँग जमा (Demand deposit) मुद्रा है।

Function OF MONEY

मुद्रा के कार्यों को दो भागों में बाँटा जाता है —

① आवश्यक कार्य
- ⓐ विनिमय का माध्यम
- ⓑ मूल्य का मापदण्ड

② सहायक कार्य
- ⓐ भावी भुगतान का मापदण्ड
- ⓑ मूल्य संचय करने का साधन
- ⓒ साख का प्रमाणपत्र

" Money is matter of function four A medium, a measure, a standard, a store.

" मुद्रा के है काम चार माध्यम, माप स्तर भण्डार।"

(2) साधारण इस्तेमाल – एक मनुष्य के द्वारा कोई भी वस्तु मुद्रा की तरह साधारण इस्तेमाल मे लाया जा सकता है।

(3) अवसर स्वीकृत – मुद्रा वही वस्तु होता है जिसे अधिकांश लोगों द्वारा अवसर स्वीकृत की जाये।

(4) विनिमय का माध्यम या मूल्य का मापदण्ड मुद्रा मे विनिमय का माध्यम का कार्य करने की क्षमता हो। साथ ही साथ मुद्रा मूल्य का मापदण्ड भी हो।

चेक को मुद्रा नही माना जाता है जबकि माँग जमा (Demand deposit) मुद्रा है।

Function OF MONEY

मुद्रा के कार्यों को दो भागों में बांटा जाता है —

(1) आवश्यक कार्य

(a) विनिमय का माध्यम

(b) मूल्य का मापदण्ड

(2) सहायक कार्य

(a) भावी भुगतान का मापदण्ड

(b) मूल्य संचय करने का साधन

(c) साख का प्रमाणपत्र

"Money is matter of function four A medium, a measure, a standard, a store.

• मुद्रा के है काम चार माध्यम, माप स्तर भण्डार।"

मुद्रा के कार्यों का विस्तार से विश्लेषण किया जा सकता है —

(A) विनिमय का माध्यम (Medium of Exchange)

मुद्रा एक ऐसी वस्तु का बना हुआ है जो सर्वमान्य होती है अर्थात जिसे सब लोग लेने को तैयार होते हैं। अतः मुद्रा वस्तुओं और सेवाओं के विनिमय के में मध्यस्थ बनकर, भिन्न-भिन्न वस्तुओं और सेवाओं की अदला-बदली में मदद करता है।

वस्तु → मुद्रा, मुद्रा → वस्तु
वस्तु → मुद्रा, मुद्रा → सेवा
सेवा → मुद्रा, मुद्रा → सेवा
सेवा → मुद्रा, मुद्रा → वस्तु

इसप्रकार विभिन्न प्रकार के विनिमय में मुद्रा माध्यम का कार्य करता है। बेचने तथा खरीदने की प्रक्रिया सरल हो जाती है। दोहरे संयोग का अभाव वस्तु विनिमय प्रणाली में महत्वपूर्ण कठिनाई थी जो मुद्रा के कारण आज दूर हो चुकी है।

(B) मूल्य का मापदण्ड (Measure of Value)

जिसतरह हमारे पास वजन तौलने के लिए छटांक, लम्बाई नापने के लिए इंच तथा गिनने के लिए गिनती है उसीतरह विभिन्न वस्तुओं और सेवाओं के मूल्य को नापने के लिए हम पर मुद्रा का मापदण्ड है।

मुद्रा मूल्य का मापदण्ड होते हुए भी इंच, छटांक आदि की तरह हमेशा ही एक सा नहीं रहता है। इसका स्वयं

का मूल्य भी बदलता रहता है।

वस्तु - विनिमय में हजारों सम्बन्ध याद रखने पड़ते थे जिन्हें याद रखना असम्भव था। मुद्रा के कारण यह समस्या दूर हो गई है। व्यापार के सभी दायित्व तथा लेनदारी मुद्रा में व्यक्त किया जाता है मुद्रा के बिना आज का व्यापार चलाना असम्भव है।

सहायक कार्य

Ⓐ कर्ज का मापदण्ड (Standard of Deferred Payment) —

आज के युग में बहुत सी वस्तुएं या सेवायें नकद मुद्रा देकर नहीं खरीदी जा सकती है। उनको खरीदते समय एक वायदा कर दिया जाता है कि उनका मूल्य भविष्य में चुका दिया जायेगा। यही नहीं आज के उद्योग बहुत अधिक रुपया लोगों से कर्ज ले लेते है। अतः कर्ज जिसे साख भी कहा जाता है आज के आर्थिक ढाँचे में बहुत महत्वपूर्ण हो गया है।

Ⓑ मूल्य संचय करने के साधन (Store of Value): —

सभी मनुष्य जितना कमाते है उस सब को खर्च नहीं कर देते। वे कुछ भविष्य के लिए बचाकर रखना चाहते है। यदि वे वस्तुओं को बचाकर रखते है तो कुछ समय के बाद उनका मूल्य घटने लगता है जिससे व्यक्ति को नुकसान हो जाता है। इसीलिए मुद्रा अपना

वस्तुओं की तुलना में मूल्य संचय का उत्तम साधन है।

(c) साख का प्रमाण पत्र (Guarantor of Solvency) —

अर्थशास्त्री केन्ट ने मुद्रा के इस कार्य का वर्णन करते हुए लिखा है कि यदि एक व्यापार अपने दैनिक खर्चों को पूरा नहीं कर पाता है तो वह दिवालिया घोषित कर दिया जाता है चाहे उसकी लेन (Assets) उसकी देन (Liabilities) से कितनी ही अधिक क्यों न हो। मुद्रा, व्यापारियों के ये दैनिक खर्चे पूरा करने में मदद करता है जिससे अन्य लोगों को उनकी साख का विश्वास हो जाता है। अतः मुद्रा साख का प्रमाणपत्र कहा जाता है।

स्थिर कार्य तथा गतिशील कार्य (Static Functions And Dynamic Functions)

अर्थशास्त्री पॉल आइंगिग (Paul Einzig) ने मुद्रा के कार्यों को दो भागों में बाँटा है —

(1) स्थिर कार्य — ये वे कार्य है जो देश की अर्थव्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने में सहायता करते है। परन्तु अर्थव्यवस्था को गति नहीं देते है; अर्थात आर्थिक प्रगति में सहायक नहीं होते जैसे माध्यम, माप, स्तर और भण्डार को स्थिर कार्य कहा जा सकता है।

(२) गतिशील कार्य — ये वे कार्य है जो अर्थव्यवस्था को गति देते है और जो विकास में सहायता देते है। मुद्रा के द्वारा आर्थिक विकास की गति को तीव्र किया जा सकता है। मुद्रा की पूर्ति बढ़ती है, कीमतें बढ़ती है, लाभ बढ़ता है, विनियोग में वृद्धि होगी, राष्ट्रीय उत्पादन बढ़ेगा और इन सब के कारण आर्थिक विकास दर तीव्र हो जाता है। हीनार्थ प्रबन्धन में भी मुद्रा का उपयोग कर आर्थिक विकास दर को तीव्र किया जा सकता है।